B-2
2-18
Ancient
India

# जैन धर्म

**जैन संघ:** महावीर स्वामी ने पावा में इस संघ को बनाया। इस संघ में 11 लोग शामिल थे जिन्हें गणधर कहा गया।

## जैन धर्म की विशेषताएं

* ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है, किन्तु उसका स्थान जिन से नीचे रखा गया।
* जैन धर्म संसार की वास्तविकता को स्वीकार करता है, परन्तु सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर को नहीं स्वीकारता
* जैन धर्म, बौद्ध धर्म की तरह वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं करता।
* जैन धर्म में पुनर्जन्म और कर्मवाद की मान्यता है।
  - ↳ कर्मवाद = कर्मफल ही जन्म और मृत्यु का कारण है।
* जैन धर्म में मुख्यतः सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त करने के उपाय बताए गये हैं।
* जैन धर्म आत्मा के अस्तित्व को स्वीकारता है।
* जैन धर्म में अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है इस प्रकार कृषि एवं युद्ध से विलग रहने की बात कही गई है।

> पावा में 72 वर्ष की आयु में हस्तिपाल के महल में महावीर स्वामी की मृत्यु हुई।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

* जैन धर्म मे संलेखना की बात कही गई है जिसका अर्थ है उपवास रहकर शरीर का त्याग करना।

जैन धर्म के केंद्र :

* जैन धर्म का प्रारंभिक केंद्र मगध था। अशोक का पौत्र सम्प्रति जैन धर्म का अनुयायी था।
* जैन धर्म का दूसरा केंद्र उज्जैन था जो कि सम्प्रति की राजधानी थी।
* कुषाण काल तक आते-2 मथुरा भी जैन धर्म का केंद्र बन गया।
* दक्षिण भारत में 9वीं सदी में राष्ट्रकूटों ने जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया। (उदा० अमोघवर्ष)
* राजस्थान एवं गुजरात में 11 वीं सदी में जैन धर्म का प्रसार हुआ। (चालुक्य शासकों के संरक्षण में)
* दिलवाड़ा (राजस्थान) में कई जैन तीर्थंकरों जैसे आदिनाथ व नेमिनाथ के मंदिर हैं।

जैन धर्म के सम्प्रदाय

| श्वेताम्बर | दिगम्बर |
|---|---|
| → नेतृत्वकर्ता : स्थूलभद्र | → नेतृत्वकर्ता : भद्रबाहु |
| → इसके शिष्यों (आचार्यों) को क्षुल्लक, ऐल्लक, निग्रन्थ कहा जाता है। | → इसके शिष्यों को साधु, आचार्य और यति कहा गया। |

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

→ इसके आचार्य कालशमुनि ने 'यापनीय संप्रदाय' की स्थापना की।

→ बाद में इस संप्रदाय से एक नए संप्रदाय 'समैया' की उत्पत्ति हुई।

Note: तेरापंथी समुदाय श्वेतांबर संप्रदाय से संबंधित है जबकि तेरापंथ समुदाय दिगम्बर संप्रदाय से संबंधित है।

## जैन संगीति

### प्रथम (300 ई.पू.)

→ स्थान: पाटलिपुत्र
→ शासक: चन्द्रगुप्त मौर्य
→ अध्यक्ष: स्थूलभद्र
→ जैन साहित्यों की रचना हुई (12 अंगों का संकलन)
→ निगरानीकर्ता आचार्य → संभूति विजय

### द्वितीय (513/700 ई.)

→ स्थान: वल्लभी विश्व-विद्यालय का प्रांगण
→ संरक्षक: चालुक्य शासक
→ अध्यक्ष: देवार्धिक्षमाश्रमण
→ पुनः जैन साहित्यों का संकलन किया गया

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

## जैन धर्म से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

* महावीर स्वामी के द्वारा दिये गये मौलिक सिद्धांत 14 प्राचीन ग्रंथों में संकलित है, जिन्हें पूर्व/पुरवों कहा जाता है।

* जैन धर्म का महत्वपूर्ण ग्रंथ कल्पसूत्र (संस्कृत में) भद्रबाहु द्वारा रचित है

* जैन धर्मग्रंथ अर्धमागधी भाषा में लिखे गये हैं कुछ ग्रंथों की रचना अपभ्रंश में भी की गई थी

* जैन धर्म की भाषा प्राकृत थी
* जैन दर्शन, सांख्य दर्शन के काफी निकट है
* प्रारंभ में जैन धर्म में मूर्ति पूजन प्रचलन में नहीं था, परन्तु बाद में महावीर तथा अन्य तीर्थंकरों की पूजा आरंभ हो गई।
* दक्षिण में जैन धर्म को संरक्षण देने वाले प्रमुख राजवंश गंग, कदम्ब, राष्ट्रकूट और चालुक्य थे।
* खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख या उदयगिरि-खण्डगिरि गुफाओं से आरंभिक जैन धर्म से संबंधित साक्ष्य मिलते हैं। हाथीगुम्फा अभिलेख में उल्लेखित है कि नंद शासक ने जिन की मूर्ति को चुरा लिया था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

जैन धर्म के संरक्षक शासक

- चन्द्रगुप्त मौर्य, बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयन, बिंदुसार, खारवेल शासक

- राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष जैन सन्यासी बन गया, उसने रत्नमालिका नामक ग्रंथ की रचना की।

— चम्पा के शासक दधिवाहन की पुत्री चन्दना महावीर की पहली शिष्या थी। (पहली महिला शिक्षिका)

→ जैन धर्म के मंदिर/मठ को बसादि/बसदिल कहा जाता है

जैन धर्म के व्यापक मूर्तिकला के रूप में

→ दिलवाड़ा – पार्श्वनाथ मंदिर

→ कर्नाटक – गोमतेश्वर का मंदिर (बाहुबली प्रतिमा) (श्रवणबेलगोला)

जैन साहित्य-

→ भगवती सूत्र: सबसे प्राचीन जैन ग्रंथ
16 महाजनपदों का वर्णन

→ नायधम्मकहासुत्त: महावीर की शिक्षाएं

→ कुवलयमाला: लेखक- उद्योतन सूरी (प्राकृत)
हूणों के आक्रमण का वर्णन

→ परिशिष्टपर्वन: लेखक: हेमचन्द्र (चालुक्य शासक कुमारपाल के दरबारी)
चालुक्यों के इतिहास की जानकारी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

→ आवश्यक सूत्र : लेखक - हेमचन्द्र
मौर्यकाल की जानकारी

→ भद्रबाहुचरित : मौर्यकाल की जानकारी

→ आचारांगसूत्र : जैन धर्म की शिक्षाएं

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR